इकाई 23 समाजवादी लोकतंत्र

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य

23.1 परिचय

23.2 लोकतंत्र एवं समकालीन समाजवाद : एक संकल्पनात्मक फ्रेमवर्क

23.3 पाश्चात्य उदारवादी लोकतंत्र

23.4 लोकतंत्र के ग़ैर-पाश्चात्य स्वरूप

23.5 समाजवादी लोकतंत्र

23.6 समाजवाद की चार मूलभूत प्रकृतियाँ : समाजवादी लोकतंत्र का सार

23.6.1 लोकतांत्रिक तकनीकें और समाजवाद

23.6.2 लोकतांत्रिक समाजवाद के प्रति रुझान

23.6.3 इंग्लैड में लोकतांत्रिक समाजवाद

23.7 व्यापक सिद्धांत

23.8 नवीन वामवाद सोवियत मार्क्सवाद पर हमला

23.9 लोकतांत्रिक क्रियाविधियों के माध्यम से समाजवाद के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ/कठिनाइयाँ

23.10 सारांश

23.11 शब्दावली

23.12 कुछ उपयोगी संदर्भ

23.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

23.0 उद्देश्य

इस इकाई में लोकतंत्र पर समाजवादी सिद्धांतों और नीतियों की सरकार के स्वरूप के रूप में चर्चा की गई है। लोकतंत्र जीवन का एक तरीका है और आदर्शों के समूह का प्रतिनिधित्व करता है। यह दावा किया जाता है कि सच्चा लोकतंत्र समाजवादी है और सच्चा समाजवाद लोकतांत्रिक है। लोकतंत्र और समाजवाद के बीच संबंध समाजवादी विचारधारा और नीति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एक मात्र घटक है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्न के लिए सक्षम हो जाएँगे :

- लोकतंत्र के विविध निरूपणों/विवेचनों को समझना;
- उदारवादी पाश्चात्य लोकतंत्र और समाजवादी लोकतंत्र के बीच अन्तर स्पष्ट करना;
- लोकतांत्रिक समाजवाद और नये वामवाद की संकल्पना को परिभाषित करना; और
- नई सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए अपनाए गए तरीकों का वर्णन करना।

23.1 परिचय

लोकतंत्र शब्द आदर्शों के एक समूह तथा राजनीतिक तंत्र, दोनों को सूचित करता है, यह एक विशेषता है जो कि यह साम्यवाद और समाजवाद शब्दों के साथ भागीदारी करता है। तथापि, 'लोकतंत्र' को 'समाजवाद' अथवा 'साम्यवाद' के मुकाबले समझ पाना कठिन है;

क्योंकि जहाँ तक अनुवर्ती (latter) शब्दों की विचारधाराएँ मार्क्सवाद में उपलब्ध है, लोकतंत्र की कभी भी एक विशिष्ट सैद्धांतिक स्रोत के साथ पहचान नहीं हुई है – अपितु यह पाश्चात्य सभ्यता के उदारीकरण की संपूर्ण प्रक्रिया का एक उपोत्पाद है। सभी राजनीतिक व्यवस्थायें समाजवादी होने का दावा नहीं करती हैं, परन्तु साम्यवादी व्यवस्था भी लोकतांत्रिक होने का दावा करती है। समाजिक लोकतंत्र को सामान्यतः एक अन्तः प्रवर्धी (endogenous) राज्य और सामाजिक शैली के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है और इसीलिए, 'समाजवादी लोकतंत्र' जो राज्य द्वारा समाज पर लागू की गई एक नीति है, के साथ इसे संभ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

यदि हम समाजवाद के इतिहास पर विचार करें, तो पाएंगे कि सफल समाजवादी आन्दोलन उन्हीं राष्ट्रों से विकसित हुए हैं जिनकी लोकतांत्रिक परम्पराएं मजबूत हैं, जैसे ग्रेट ब्रिटेन, हॉलैण्ड, बेल्ज़ियम, स्विटज़रलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि। ऐसा इसलिए कि जहाँ जहाँ लोकतांत्रिक संवैधानिक शासन आमतौर पर स्वीकार किया जाता है, वहाँ समाजवादी कतिपय कार्यक्रमों पर केन्द्रित रहते हैं, जैसे अल्पसुविधा प्राप्त वर्गों के लिए अवसरों का सृजन जिससे असमानता समाप्त हो, शैक्षणिक अवसर प्रदान करना, विभेदकारी प्रथाओं को समाप्त करना, सभी के लाभ के लिए अर्थव्यवस्था का विनिमयन और अन्ततः प्रतिस्पर्द्धा की बजाए सहयोग पर आधारित समाज के पुनर्निमाण का प्रस्ताव।

इस इकाई में, हम पाश्चात्य उदावादी लोकतंत्र और समाजवादी लोकतंत्र के बीच एक तुलनात्मक प्राक्कलन करने, लोकतांत्रिक समाजवाद तथा नए वामगार्ग जिसका समाजवादी प्रतिरूप है, के सिद्धांत को रेखांकित करने और अन्ततः विशेषरूप से विकासशील और अविकसित राष्ट्रों के लिए समाजवादी लोकतंत्र की अधिकारिकता को समझने का प्रयास करेंगे।

23.2 लोकतंत्र एवं समकालीन समाजवाद : एक संकल्पनात्मक फ्रेमवर्क

सर्वप्रथम हम कार्लमार्क्स से पहले आधुनिक लोकतंत्र की संकल्पना की जाँच करें। यह ध यान देना महत्त्वपूर्ण है कि उनके निकट सहयोगी फ्रीडरिश एन्जिल्स लोकतंत्र की नहीं, अपितु हमेशा शुद्ध लोकतंत्र के बारे में बोलते हैं। इससे उनका तात्पर्य बुर्जुआ राज्य से थ,ा जिसमें आम मताधिकार प्रचलित है; परन्तु निजी सम्पत्ति को स्पर्श नहीं किया जाता है। इसका तात्पर्य था कि सामंतवादी और सैनिक शासन को जड़ से उखाड़ फेंकने के बाद प्रत्यक्ष तौर पर समाजवादी राज्य अथवा युद्ध लोकतंत्र की स्थापना करना संभव था, अर्थात बुर्जुआ पूंजीवादी गणतंत्र सर्वप्रथम सत्ता में आएगा। उस समय जनता ने लोकतांत्रिक राज्य को स्वीकार किया, क्योंकि बुर्जुआ राज्य सामान्य मताधिकार के तरीके से शासित था।

जब मार्क्स ने अपने राजनीतिक क्रियाकलापों का आरम्भ किया, उन्होंने उस समय लोकतंत्र को पहले ही एक महान अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में पाया। यूरोपियन लोकतंत्र का इतिहास पीछे ढाई हज़ार वर्ष तक व्यापक था। प्राचीन ग्रीस के गणतंत्रों में लोकतंत्र का राजनीतिक स्वरूप धनी अथवा अभिजात के 'अल्पसंख्यक' शासन के प्रति संकुचन (contract) था। इसके विरोध में, लोकतंत्र बहुमत, सामान्यतः जनमत का शासन था जिसके द्वारा संपत्ति के मालिकों अथवा अभिजातीयता के धारकों का दावा करने का कोई विशेषाधिकार नहीं था। ग्रीक राजनीति विज्ञान ने इस प्रश्न को स्वयमेव उठाया था कि क्या प्रत्येक राज्य जिसमें नागरिकों के बहुमत की इच्छा से निर्णय होता है, लोकतंत्र है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह बहुमत किस प्रकार बनता है और तैयार होता है अथवा

निश्चित वर्ग का स्वरूप लोकतंत्र से जुड़ा होता है। अरस्तू ने इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दियाः लोकतंत्र राज्य में गरीबों के शासन से अधिक कुछ नहीं है, ठीक उसी प्रकार जैसे अल्पतंत्र में धनी लोगों का शासन होता है।

मध्यकाल में, लोकतांत्रिक स्वरूप स्वयमेव शहरी कम्यूनों (communes) में दिखाई दिया। आधुनिक काल में संक्रमण के दौरान अति परिवर्तनकारी (radical) धार्मिक सम्प्रदाय लोकतांत्रिक विचारकों के अग्रन बने। इस प्रकार लोकतांत्रिक जनसमुदाय और उनके नेता आधुनिक विकास के प्रति शक में संगठित हो गए थे तथा उनके अभिमत कि गणतंत्र और लोकतंत्र, दोनों प्राथमिक तौर पर एक नैतिक मामला, मानव जाति का नैतिक नवीनीकरण था, में पहले ही आधुनिक आर्थिक और सामाजिक विकास की निन्दा अन्तर्विष्ट थी।

आज, लोकतांत्रिक आदर्श व्यष्टिवाद, समाजवाद और राष्ट्रवाद के संयोजन मात्र से कुछ अधिक है। यह मनुष्यों के प्रत्येक समूह के जीवन के चारित्रिक लक्षण की स्वीकृति और प्रोन्नति पर आधारित है, जिससे व्यष्टिवाद क्षेत्रीयवाद अथवा राष्ट्रवाद के एक स्वरूप से जुड़ जाता है और दूसरी तरफ, इसका तात्पर्य किसी एक समूह के संगठन से है जो समाजवाद के आरंभिक स्वरूपों में अन्तर्निहित स्वरूप की तुलना में कम समांगी (homogeneous) होता है क्योंकि लोकतंत्र का अर्थ है स्वैच्छिक परिसंघों की स्वतंत्रता और ऐसे परिसंघों द्वारा कई प्रकार के कार्यों का निष्पादन जो आरंभिक समाजवादियों द्वारा राज्य के लिए छोड़ दिए गए होंगे।

लोकतंत्र, प्रथम प्रधान वैधता की सिद्धांत है। सत्ता तभी विधिसम्मत होती है जब यह जनता के प्राधिकार से व्युत्पन्न हो तथा उनकी सहमति पर आधारित हो। नियामक दृष्टिकोंण से, लोकतंत्र की परिभाषा 'लोगों की सत्ता' शब्दावली के शब्दिक अर्थ से निकलती है। इसकी निश्चित तौर पर पहचान विकसित, प्रतिनिधिक संस्थाओं के अस्तित्व तथा संवैधानिक शासन की स्थापना से होती है। यह सत्ता के प्रत्यक्ष प्रयोग का पूर्वानुमान नहीं करती है, अपितु सत्ता के ठैलिगेशन का जोकि सरकार के 'नियंत्रण' और 'सीमांकन' का एक तरीका है। उस समय से लेकर जब शब्द 'डैमोक्रेशिआ' था मोटे तौर पर एक शताब्दी पहले तक, लोकतंत्र एवं राजनीतिक संकल्पना के रूप में प्रयोग किया जाता था। तथापि, टॉकवी (फ्राँसीसी राजदूत और लेखक) अमेरिकी लोकतंत्र के सामाजिक पहलू से प्रभावित हुए और इस प्रकार हम 'सामाजिक लोकतंत्र' की बात करते है। मार्क्सवाद ने 'आर्थिक लोकतंत्र' और श्रेणी समाजवाद अभिव्यक्ति को लोकप्रिय बनाया है; वैब की पुस्तक 'इन्डसट्रियल डैमोक्रेसी' (1897) 'औद्योगिक लोकतंत्र' उपनाम को चालू अवस्था प्रदान की है। उपनाम जैसेकि जनता का लोकतंत्र, संविधान लोकतंत्र अथवा इन जैसे अन्य लोकतंत्र एक विशेष लोकतंत्र को पेश करते हैं। जब 1860वें दशक के अंत में यूरोप में समाजी आन्दोलन का पुनरूत्थान हुआ, सर्वाधिक समाजवादी नेता मार्क्सवाद के प्रभाव में थे। 1881 में, जर्मन सोशल डैमोक्रेटिक पार्टी ने तथा 1897 में स्वीडिश डैमोक्रेटिक सोशल पार्टी ने अपने उद्देश्यों के रूप में उत्पादन, वितरण और विनिमय के सभी साधन जनता के स्वामित्व में स्वीकार किए। अन्य समाजवादी दलों ने अपने संविधानों अथवा घोषणा पत्रों में इन्ही उद्देश्य को अपनाया और ब्रिटिश श्रमिक आन्दोलन ने भी, जिसने 1918 तक समाजवाद को स्वीकार नहीं किया था, कुछ सीमा तक जनता के स्वामित्व के उद्देश्य को अपना लिया।

अब द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति से तीन दशक से थोड़ा अधिक समय गुजर जाने के बाद तस्वीर भिन्न है। इटली और फ्रान्स को छोड़कर पश्चिम के सभी विकसित लोकतांत्रिक देशों में साम्यवादी दलों का नाम मात्र का अस्तित्व है और इटली और फ्रांस के साम्यवादी दलों की शक्ति में भी कमी आई है। पूर्वी यूरोप के साम्यवादी देशों में, सुधारवादी प्रवृत्तियाँ

बढ़ रहीं हैं, जबकि स्वयं रूस में फ्रुश्चेव के इस सिद्धांत को बढ़ती हुई स्वीकृति प्रतीत होती है कि साम्यवादी दलों के लिए साधनों के प्रश्न को छोड़ देना संभव है। दूसरी तरफ, सभी यूरोपियन देशों में सामाजिक लोकतांत्रिक दलों की शक्ति में वृद्धि हुई है। वे या तो सत्ता में रहे हैं अथवा प्रमुख विरोधी दल के रूप में उभरे हैं। वे उत्पादन, वितरण अथवा विनिमय के साधनों के जनता के स्वामित्व के आधार पर अर्थव्यवस्था से संपूर्ण पूजीवादी व्यवस्था को प्रतिस्थापित करने माँग नहीं करते हैं। उनका पूर्ण रोज़गार और सामाजिक सुरक्षा वाली मिश्रित अर्थव्यवस्था से सामंजस्य बैठ गया है। बीसवीं शताब्दी के सामजवाद लेखकों ने जोर दिया है कि समाजवाद को समानता, स्वतंत्रता और सहचर्य के मूलभूत मूल्यों के संदर्भ में परिभाषित किया जाना चाहिए, न कि किसी विशेष माध्यम से जिसके द्वारा उन मूल्यों को प्राप्त किया जा सके। इसी प्रकार के परिवर्तन सभी यूरोपियन समाजवादियों के कार्यक्रमों में दृष्टिगोचर हो रहे हैं – ये दल जनता के स्वामित्व के प्रति और अधिक विभेदकारी दृष्टिकोण अपना रहे हैं; तथापि सामाजिक लोकतंत्र जनता की इस माँग का समर्थन करता है कि महत्त्वपूर्ण जनहितों की रक्षा करना आवश्यक है।

इस प्रकार, अविकसित विश्व में समाजवादी पाश्चात्य देशों में साम्यवाद और सामाजिक लोकतंत्र के भाग्य में इन परिवर्तनों और सामाजिक लोकतांत्रिक दलों के बदलते हुए उद्देश्यों के सर्वेक्षण से कुछ महत्त्वपूर्ण पाठ सीख सकते हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) लोकतंत्र से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) भूतपूर्व साम्यवादी देशों में किस तरीके से लोकतंत्र के अवबोधन में परिवर्तन हुआ है?.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

23.3 पाश्चात्य उदारवादी लोकतंत्र

राजनीति की आधुनिक उदारवादी संकल्पना ने एक यथार्थवादी, व्यावहारिक, धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक अवस्थिति प्राप्त की। राज्य एक निर्णायक राजनीतिक संगठन बन गया। रूसो ने लोप्रिया संप्रभुता और लोकतंत्र के विचार को जन्म दिया। यह प्रतिष्ठापित किया गया कि लोगों की पहुँच के भीतर, राज्य, सरकार और अर्द्ध-सरकारी संस्थाएं आदि जैसी संस्थाएं राजनीतिक क्रिया कलाप की केन्द्र बन गई। निजी संपत्ति के अधिकारों और व्यष्टिगत स्वतंत्रता का दावा किया जाने लगा। एक प्रगतिशील उदारवादी संकल्पना में राज्य को एक निश्चयात्मक कल्याणकारी अंग के रूप में माना जाता है। उदारवादी लोकतंत्र ने जनता की इच्छाओं के प्रतिनिधित्व के लिए आवश्यक प्रतिस्पर्धी दल के आदर्श का आश्वासन दिया। इसमें विधायिकाओं के आवधिक चुनावों के माध्यम से लोगों के मत को प्रकाश में लाना अन्तर्ग्रस्त है। इसके अतिरिक्त, सरकार सीमित तथा स्वैच्छिक परिसंघों के विश्व में कार्य करती हुई मानी जाती है। समाज बहुकारी के रूप में देखा जाता है, जिसका तात्पर्य है कि यह स्वायत्त क्षेत्रों और परिसंघों से मिलकर बना है। इस प्रकार सरकार आमहित में शासन के लिए निर्दिष्ट होती है।

पाश्चात्य उदारवादी लोकतंत्र ऐसा राजनीतिक सिद्धांत है जो सत्रहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में प्रकट हुआ तथा विश्व के अधिमती सिद्धांतों और विचारधाराओं के रूप में आज भी जारी है। इसमें वे समाजवादी देश शामिल नहीं हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार की तानाशाही है। इस संकल्पना के विकास में जॉन लॉक, जेरेमी बैनथम और जे.एस. मिल की चर्चा करना आवश्यक है। लॉक ने सीमित सरकार, संवैधानिकता, व्यष्टिगत अधिकारों और विधिसम्मत शासन का योगदान दिया। बैनथम का योगदान व्यष्टिगत उपयोगिता के संदर्भ में आंकलित बहुमत के हित की उपयोगितावादी संकल्पना में सन्निहित है। मिल ने व्यष्टिगत स्वतंत्रता, अभिमतों की बहुलता तथा व्यष्टिगत व्यक्तित्व के विकास के सिद्धांत का योगदान दिया।

जब हम उदारवादी राज्य को राजनैतिक रूप से लोकतांत्रिक राज्य के रूप में परिभाषित करते हैं, हमें ध्यान देना चाहिए कि यह मात्र चुनावी प्रक्रिया का ही हवाला नहीं देता है अपितु विधिसम्मत शासन और सम्पत्ति का अधिकार जैसे पहलुओं का भी हवाला देता है। यूनाइटेड किंगडम की तरह लिखित संविधान के बिना उदारवादी प्रणाली में, इसका तात्पर्य है कि संसद द्वारा बनाया गया कानून सर्वोच्च है। तथा उदारवादी लोकतांत्रिक राज्यों में सस्वीकृत सम्पत्ति का अधिकार सरकार को आर्थिक मामलों में भारी परिवर्तन करने से रोकता है। यही कारण है कि सुधारवादी दृष्टिकोण आर्थिक समानता पर बल न दिए जाने के लिए उदारवादी लोकतंत्र की समालोचना करता है। उन्होंने स्वयं को जन लोकतंत्र (people's democracy) कहा, जिसका तात्पर्य है कि उत्पादन के साधन सामाजिक स्वामित्व में हैं।

इस प्रकार, उपरोक्त से लोकतंत्र की उदारवादी संकल्पना की एक अति सुन्दर तस्वीर उभरती है और जो मान्यताओं पर आधारित है : प्रथम, यह मानती है कि व्यष्टि को स्वायत्त दिमाग, बुद्धि और इच्छा शक्ति प्रचुर मात्रा में प्रदत्त है अर्थात वह विवेकशील प्राणी है। अतः वह निर्णय कर सकता है कि उसके लिए क्या सर्वोत्तम है। दूसरे, व्यष्टि एक नीतिपरक प्राणी है, जिसका अर्थ है कि सभी मनुष्य बराबर हैं। प्रत्येक को राजनीति में भागीदारी का समान अवसर मिलना चाहिए। तीसरे, सत्य सापेक्ष और बहुआयामी है तथा निरपेक्ष नहीं होता। इसीलिए, एक विशेष क्षण में, सत्य मात्र विचारों की मुक्त अन्योन्य क्रिया के माध्यम से ही स्थापित किया जा सकता है। सहिष्णुता लोकतंत्र का सार है, मिल द्वारा ''ऑन लिबर्टी'' में प्रबल तर्क दिया गया था। लोकतंत्र में सत्य का अर्थ है कि प्रत्येक राजनीति

में हिस्सा ले सकता है और यह जनता का शासन है, अतः एक लोकतांत्रिक सरकार सभी के हित में काम करती है। नेताओं और दलों के बीच प्रतिस्पर्धा, शासन के ऊपर लोकप्रिय नियंत्रण और व्यष्टियों की अधिकतम स्वतंत्रता सुनिश्चित करती है। विधि सम्मत शासन, विधि के समक्ष समानता और न्यूनतम मौलिक अधिकार एक पाश्चात्य उदावादी लोकतंत्र के लक्षण हैं।

23.4 लोकतंत्र के ग़ैर-पाश्चात्य स्वरूप

कुछ को यह जानकर आश्चर्य होगा कि भूतपूर्व सोवियत संघ, साम्यवादी चीन, उत्तरी कोरिया और उत्तरी वियतनाम, और ऐसे ही कुछ और लोकतांत्रिक होने का दावा करते हैं। वस्तुतः वे अकेले सच्चा लोकतांत्रिक होने का दावा करते हैं। इस दावे के सही स्वरूप को समझने के लिए, मार्क्स की तरफ वापस जाना महत्त्वपूर्ण होगा। उनका विश्वास था कि पाश्चात्य की राजनीति वर्ग संघर्षों के स्वरूप की थी और यह कि दलों के बीच प्रतिस्पर्धा वर्ग संघर्ष के अन्त के साथ ही समाप्त हो जाएगी। उनके विचार में सच्चा लोकतंत्र केवल वहीं विद्यमान होगा जहाँ एक वर्ग का वर्चस्व हो तथा जो जबर्दस्त जन समुदाय का प्रतीक हो। लोकतंत्र के अन्य सभी स्वरूप बुर्जुआ होने के कारण अस्वीकृत कर दिए गए थे। यदि सत्ता संघर्ष प्रतिस्पर्धात्मक आधार पर होता, ताकि यह धन द्वारा प्रभावित हो सके, वहाँ मार्क्स मानते थे कि वह लोकतंत्र बुर्जुआ तथा इसीलिए अयोग्य है।

स्पर्द्धात्मक राजनीति की साम्यवादियों द्वारा एक जालसाज़ी होने के नाते जिन्दा की गई है। वे स्वयमेव किसी अन्य वर्ग के होने का दावा नहीं करते हैं, क्योंकि वे कहते हैं कि सभी उल्लेखनीय समूह रूसी क्रांति के आरंभिक दिनों में ध्वस्त कर दिए गए थे। सोवियत कानूनविद और राजनीतिक समर्थक तर्क देते हैं कि लोकतंत्र का पाश्चात्य स्वरूप एक धोखा तथा पाखण्ड है, क्योंकि यहाँ एक ऐसा आर्थिक तंत्र-पूंजीवाद कायम है जो धनी लोगों का पक्ष लेता है।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) पाश्चात्य उदारवादी लोकतंत्र के प्रमुख लक्षण क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) लोकतंत्र के ग़ैर पाश्चात्य स्वरूपों से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

23.5 समाजवादी लोकतंत्र

पश्चिम में जहाँ पूंजीवाद प्रचलन में है यह समाजवादी सिद्धांत के साथ सामंजस्य बिठाने क्रमश हवास अनुकूलन का स्वरूप ले लेता है। हम सभी जानते हैं कि समाजवाद क्या है। अन्य विचारधाराओं की संकल्पनाओं को साथ लेने पर समाजवाद का दूहरा संदर्भ है। एक तरफ यह उन आदर्शों, मूल्यों, गुणों का हवाला देता है जिन्हें प्रायः समाजवादी दर्शन का नाम दिया जाता है। यह सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं के उन अनुभवजन्य लक्षणों का हवाला देता है, जोकि समाजवादी लोकतंत्र के – विज़न (vision) को अभिव्यक्त करते हैं। दूसरी तरफ, मूल्यों के स्तर पर महत्त्वपूर्ण हैं स्वतंत्रता, समानता, समुदाय, भाईचारा, सामाजिक न्याय, वर्गहीन समाज, सहयोग प्रगति, शान्ति, समृद्धि, प्रचुरता और प्रसन्नता, कभी-कभी मूलतत्व नकारात्मक रूप में पेश किए जाते हैं, समाजवादी कलह, युद्ध, अन्याय, गरीबी, तंगहाली और अमानवीकरण का प्रतिवाद करते हैं। संस्थाओं के स्तर पर अनुयायी और विरोधी समान रूप से कहेंगे कि समाजवाद पूंजीवादी निजी उद्यम प्रणाली का विरोधी है; जिसे वह धन और संपत्ति के ऊपर नियंत्रण तथा आर्थिक क्रिया कलाप के सामाजिक पर्यवेक्षण की प्रणाली द्वारा विस्थापन की माँग करता है। इस सूत्र में इसका सार है यानि, कि उत्पादन साधनों का समान अथवा सार्वजनिक स्वामित्व।

राजनीतिक वार्त्तालाप में नाम स्वयमेव समय-समय पर अस्थायी रहे हैं। उदाहरण के लिए, जॉन रस्किन अपने को गौरव के साथ साम्यवादी कहते थे, जब उन्होंने समाजवाद, गणतंत्रवाद और लोकतंत्र का खंडन किया। एच.एम. हिन्डमैन के लिए समाजवाद शब्द ईसाई-उदारता, सौमयता का प्रतीक था, जबकि सामाजिक लोकतंत्र शब्द का अर्थ उनके लिए आक्रामक मार्क्सवाद था। वास्तव में, आज स्थिति इसके प्रतिकूल होगी। यह प्राऊधन था, नकि मार्क्स और एन्गिल्स जिन्होंने सर्वप्रथम अपने सिद्धांत को 'वैज्ञानिक समाजवाद' का नाम दिया। एक बार बकूनिन ने एक संगठन बनाया जिसे समाजवादी लोकतंत्र के लिए गठबंधन पुकारा गया। मार्क्स ने स्वयमेव अपनी युवावस्था में साम्यवाद को यह कहकर खारिज कर दिया था कि यह ''समाजवाद की अपूर्ण प्राप्ति'' मात्र था तत्पश्चात मार्क्सवादी प्रयोग अधिक व्यवस्थित हो गए, यद्यपि वे कभी भी संदिग्धता से पूर्णरूपेण मुक्त नहीं थे।

23.6 समाजवाद की चार मूलभूत प्रकृतियाँ : समाजवादी लोकतंत्र का सार

इस इकाई में उन प्रवृत्तियों को और अधिक योजनाबद्ध रूपरेखा प्रदान करने का प्रयास किया गया है, जो साथ-साथ समाजवादी लोकतंत्र की धारणा में प्रतिबिम्बित समाजवादी विचारधारा को पूर्णता प्रदान करती है। समानतावाद प्रथम प्रवृत्ति है जो समाजवाद का उत्कृष्ट सिद्धांत है। समानता की प्रबल धारणा समुदाय की, एक संकल्पना में पराकाष्ठा को प्राप्त होती है। राजनीतिक तौर पर समानतावाद स्पष्ट रूप से पूर्ण लोकतंत्र की माँग करता है, परन्तु लोकतंत्र अपने सहज, उत्कृष्ट, एकात्मक अर्थ में बिना किसी स्थायी दल विभाजन वाला होता है।

नैतिकतावाद, जो अगली प्रवृत्ति है, समाजवाद के ईसाई सिद्धांत को दर्शाता है; अर्थात यह उच्च आदर्शों पर बल देता है जो पारस्परिक सहायता से शत्रुता के स्थान पर न्यायप्रिय स्थिति कायम करने, तथा मानवों के बीच भातृवत प्यार और समझ को बढ़ावा देने की माँग करते हैं। नैतिकतावादी मूल्यों के साथ सर्वाधिक तालमेल वाला राजनीतिक स्वरूप, एक बार फिर लोकतंत्र है, जोकि पेत्रिकवाद से संभवतया कुछ हद तक प्रभावित होता है और जो निश्चित तौर पर व्यक्गित सिद्धांतों से नरमता और जिम्मेदारी की अपेक्षा करता है। वहुमतवादी प्रणाली द्वारा शसित लघु तथा विशाल समुदाय नैतिकवाद आदर्श को प्राप्त करने के लिए समुचित यंत्र हैं।

तार्किकवाद तीसरी प्रवृत्ति है जो विवेक के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ, प्रमुख मूल्य हैं व्यष्टिगत प्रसन्नता, विवेकशीलता, ज्ञान, उत्पादन में दक्षता और प्रगति के हित में मानव समाज का तर्कपूर्ण उद्देश्यपरक संगठन। तार्किकवाद से अभिप्रेरित राजनीतिक स्वरूप भी लोकतंत्र है, क्योंकि यह प्रवृत्ति मानव मात्र की समानता को अंगीकार करने के लिए अग्रसर होती है तथा व्यष्टिगत मानव विवेक की स्वतः सन्तुष्टि में विश्वास करती है। तथापि इसका ऐसा विश्वास है कि लोकतंत्र योग्यतावाद, निपुण वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और बुद्धिमान लोगों द्वारा सतत निर्देशन से प्रभावित होना चाहिए, जो सामान्य जन की प्रसन्नता के प्रोत्साहन के लिए विश्वस्त हैं।

इच्छास्वातंत्र्यवाद जिसे समाजवाद के स्वच्छंद सिद्धांत का नाम दिया जा सकता है, मूलभूत प्रकृतियों में इस अर्थ में अन्तिम है कि यह समाजवादी सिद्धांतों में उत्कृष्ट तथा परिवर्तनवादी है। यह आदर्श स्वतंत्रता पर केन्द्रित है, नियंत्रण की सम्पूर्ण अनु-परिथति के अर्थ में चाहे आंतरिक अथवा बाह्य। यहाँ अनुकूल राजनीतिक व्यवस्था के संदर्भ में बात करना कठिन होगा, क्योंकि यह प्रवृत्ति कुल मिलाकर राजनीति का परित्याग करता है। अराजकताबाद इसके आदर्श के निकटतम है; परन्तु पुनः इच्छास्वातंत्र्यवाद मौलिक अर्थ में समानता की स्वीकृति को अंगीकार करता है। इच्छास्वातंत्र्यवाद सर्वाधिक सौम्य तथा सहिष्णु समाजवादी प्रवृत्ति है।

समाजवाद की यह चार प्रवृत्तियाँ हैं, जो समाजवादी लोकतंत्र के सार का निरूपण करती हैं। तथापि, प्रत्येक प्रवृत्ति का सापेक्ष सार एक मामले से दूसरे मामले में बदल जाता है। दूसरे शब्दों में, हम पाएंगे कि एक या अन्य प्रवृत्ति प्रदत्त देश, सिद्धांत, आन्दोलन अथवा ऐतिहासिक अवनति के मामले में दूसरे के ऊपर वर्चस्व कायम करती है। यही कारण है पाश्चात्य नवीन वामवाद में इच्छास्वातंत्र्यवाद का वर्चस्व सामाजिक लोकतंत्र की बढ़ती हुई नरमता और एकीकरण की वजह से है।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाएं।

1) समाजवादी लोकतंत्र के प्रमुख लक्षण क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

2) इच्छास्वातंत्र्यवाद से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

23.6.1 लोकतांत्रिक तकनीकें और समाजवाद

यूरोप में फासिस्टवाद के उत्थान और भूतपूर्व सोवियत संघ में कम्यूनिस्ट पार्टी की तानाशाही के जारी रहने से तीसवें दशक के दौरान ऐसे भी समाजवादी हुए जिन्होंने एक समूहवादी शासन के अधीन लोकतंत्र की तकनीकों की ओर अधिकारिक ध्यान दिया। जबकि सामान्यतः समाजवादी आन्दोलन कई वर्षों तक इस बात पर कायम रहा कि लोकतंत्र के बिना समूहवाद समाजवाद की दूर की चिल्लाहट थी और यह कि देश के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं में पूर्णरूपेण अपनाई जाने वाली लोकतांत्रिक क्रियाविधियों के सहयोग के बिना कोई समाजवाद नहीं हो सकता था, ऐसे बहुत थे जिन्होंने तीसवें दशक से पहले की यह स्थिति अंगीकार की कि जो कुछ भी किया जाना आवश्यक था, वह मात्र यह था कि निजी उद्योग को लोक स्वामित्व का उद्योग बना या जाए और लोकतंत्र स्वयमेव स्थापित हो जाएगा। राज्य के स्वामित्व और नियंत्रण में प्रयोग ने साम्यवादी और फासिस्ट देशों एवं लोकतंत्र के स्वरूप वाले देशों में भी, युद्ध तथा शान्ति दोनों कालों में, आन्दोलन के इन विद्यार्थियों को जगाया और उद्योग की एक सहयोगी व्यवस्था के अधीन लोकतांत्रिक प्रक्रिया की रक्षा करने और उसे मजबूत बनाने के उपायों के माध्यमों के बारे में सोचने के लिए बाध्य किया। इस परीक्षण ने उनसे निम्न बातों पर जोर डलवायाः

1) जनसंख्या के लोकतांत्रिक बलों को आरक्षित और मजबूत करने की आवश्यकता, जैसे व्यापक और औद्योगिक –संघ आन्दोलन, उपभोक्ताओं और उत्पादकों की सहकारी संस्थाएं, मजदूरवर्ग, समाजवादी और प्रगतिशील राजनीतिक दल, जन समुदाय के शैक्षिणिक और सांस्कृतिक आन्दोलन तथा इन आन्दोलनों को पूर्णरूपेण लोकतांत्रिक बनाने के लिए प्रयास।

2) औद्योगिक कर्मियों, तथाकथित मध्यवर्ग, कृषिकार्य में लगे लोगों के बीच बेहतर सामाजिक प्रबंधन के लिए निकट सहयोग स्थापित करने की आवश्यकता।

3) स्थानीय, राज्य और संघीय सरकारों पर प्रभावी लोकतांत्रिक तकनीकों करे लागू करने की आवश्यकता, जिससे लोगों की इच्छा के अनुरूप पूर्णरूपेण उद्दीपनशील (responsive) बनायी जा सकें।

4) उद्योग की सहकारी प्रणाली के तहत स्वैच्छिक सहकारी उद्यमों के एक व्यापक तंत्र के प्रोत्साहन की आवश्यकता, जो विशेष रूप से कृषि, आबंटनीय व्यापार और सांस्कृतिक क्रियाकलाप में लोक स्वामित्व वाले उद्योगों के पूरक के रूप में हो।

5) प्रत्येक उद्योग के भीतर क्रियाविधियों की प्रतिष्ठापना की आवश्यकता ताकि उपभोक्ता, मज़दूर वर्ग तथा तकनीकी और प्रशासनिक दल, नीतियों के निर्धारण में पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व कर सकें।

6) अर्द्ध-स्वायत्त स्वरूप वाले जन स्वामित्व के निगम के साथ परीक्षण तथा लोक स्वामित्व के नियंत्रण और प्रशासन का विकेन्द्रीकरण, जिससे वह सामंजस्य बिठाने वाला तथा सामाजिक दृष्टि से दक्ष प्रतीत हो।

7) सिविल सेवा, सार्वजनिक लेखांकन, सामूहिक लेनदेन, व्यक्तिगत संबंध आदि के ठोस तंत्र के माध्यम से दक्ष, ईमानदार और लोकतांत्रिक प्रशासन के प्रति निदेशित प्रशासनिक क्रियाविधियों को विकसित करने की आवश्यकता। उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कारों की उचित प्रणाली के माध्यम से औद्योगिक प्रोत्साहनों को बढ़ावा देने के लिए तकनीकों का विकास किया जाना चाहिए।

8) उपभोक्ता की रुचि की स्वतंत्रता की आवश्यकता।

9) जाति, धर्म, रंग, अथवा राष्ट्रीय मूल के कारण जनसंख्या के किसी भी वर्ग के प्रति विभेदकारी प्रथाओं को रोकने और नागरिक स्वतंत्रता को आरक्षित करने की आवश्यकता।

10) अन्य देशों के साथ सहयोग की आवश्यकता, जिससे युद्ध के कारणों को कम किया जा सके, साम्राज्यवादी नियंत्रणों का उन्मूलन हो सके तथा विश्वभर में जीवन स्तर को उठाया जा सके।

23.6.2 लोकतांत्रिक समाजवाद के प्रति रुझान

लोकतांत्रिक समाजवाद के उद्देश्यों में एक बात सदैव समान रही है कि समाज के राजनीतिक क्षेत्रों से गैर-राजनीतिक क्षेत्रों में लोकतांत्रिक सिद्धान्तों के अनुप्रयोग को व्यापक बनाकर लोकतंत्र को और अधिक वास्तविकता प्रदान की जाए। पूजा की स्वतंत्रता और राजनीतिक संघों की स्वतंत्रता आज भी लोकतंत्र के सर्वाधिक आवश्यक आधार हैं। समाजवादी 'लोकतंत्र के इन उत्कृष्ट मुद्दों' की प्रोन्नति पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। इसके प्रतिकूल, समाजवादी दलों ने एक कठिन लड़ाई लड़ी है और सामान्यतः उन राष्ट्रों में एक हारा हुआ संघर्ष लोकतंत्र जहां एक प्राणी मात्र नहीं है, अपितु ऐसी प्रेरणा, आशा व विचार है जिसे अभी प्राप्त किया जाना है। उदाहरणार्थ ऐसा जर्मनी, इटली और फ्रांस में हुआ था।

23.6.3 इंग्लैड में लोकतांत्रिक समाजवाद

इग्लैण्ड ने संसदीय संस्थाएं विकसित की जो समाजवाद के विकास की प्रेरक थीं। इग्लैण्ड समय के साथ चला और उसने लोकतंत्र और समाजवाद के बीच सामंजस्य स्थापित किया। समाजवाद को शन्तिपूर्ण ढंग से उभारा गया, जिससे खूनी क्रांति की आवश्यकता न पड़े। लोकतंत्र ने सामाजिक सिद्धांतों के उत्थान को सहन किया।

ब्रिटेन में, मज़दूरों को सरकार के विरुद्ध विशाल पैमाने पर विद्रोह की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि सरकार ने उनके हितों की प्रोन्नति के लिए स्वयमेव आवश्यक कदम उठाए। ब्रिटिश भूमि लोकतांत्रिक समाजवाद के विकास के लिए उपयुक्त थी, जबकि दूसरी तरफ रूस और चीन में, वातावरण अनुकूल नहीं था क्योंकि सरकार ने गरीबों के हितों की अनदेखी की और उन्हें दबाने की कोशिश की। परिणामस्वरूप, क्रांतिकारी समाजवाद का उदय हुआ और इसकी लहर ने सरकार के पैर उखाड़ दिए।

लोकतांत्रिक समाजवाद में एकदलीय साम्यवाद की तरह कोई पादरी नहीं है। इधर मार्क्स अथवा लेनिन भी नहीं हैं। इंग्लैण्ड में सर्वाधिक प्रभावशील समाजवादी विचारक प्रायः किसी सरकारी पद पर नहीं रहे हैं। उनका प्रभाव उनके नैतिक प्राधिकार और सरल साहित्यिक शैली के कारण रहा है।

यह आन्दोलन रॉबर्ट ऑवेन, सिडनी तथा बिअर्ट्रिस वेब, आर.एच. टॉनी, जी.डी.एच. कोल, हैरॉल्ड लस्की तथा कई अन्य के विचारों के प्रति अधिक ऋणी है। परन्तु दर्शन अभी भी अपरिभाषित है। भक्तवत्सलम के अनुसार ''लोकतांत्रिक समाजवाद का स्वरूप और उसके घटक किसी भी माध्यम से परिभाषित नहीं किए जा सकते हैं। यह एक व्यापक फ्रेमवर्क है जिसमें हमें अपनी राजनीतिक पृश्ठभूमि और सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विरासत के अनुरूप चलते हुए लोकतंत्र और समाज के अपने विचारों को उपयुक्त स्थान देना पड़ता है।'' अतः लोकतांत्रिक समाजवाद का कोई निश्चित स्वरूप नहीं है। यह विभिन्न देशों में उनकी आवश्यकताओं और अन्य शर्तों के अनुसार अलग अलग हो जाता है। तथापि, लोकतांत्रिक समाजवाद के कतिपय व्यापक सिद्धांतों की ओर हम इशारा कर सकते हैं।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) लोकतंत्र के समाजवाद के साथ मिलान करने के लिए कुछ तकनीकों की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) इंग्लैण्ड में लोकतांत्रिक समाजवाद का विकास किस प्रकार हुआ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

23.7 व्यापक सिद्धांत

लोकतांत्रिक समाजवाद संकीर्ण और स्वार्थपूर्ण व्यष्टिगत हितों की बजाए संपूर्ण समाज के अधिकांश हितों के महत्त्व पर भारी बल देता है। यह व्यष्टियों अथवा अहस्तक्षेप नीति के विरुद्ध है, यह सामुदायिक कल्याण का एक सिद्धांत है। यह प्रतिस्पर्धा की बजाए सहयोग को बढ़ावा देता है तथा नियोक्ता और कर्मचारी के बीच प्रतिद्वंदिता को दूर करता है।

समाजवाद आर्थिक समानता के सिद्धांत का समर्थन करता है। राज्य को कुछ व्यक्तियों के हाथों में धन के संग्रहण पर रोक लगानी चाहिए जिससे अमीर और गरीब के बीच खायी न बढ़े। तथापि, लोकतांत्रिक समाजवाद निरपेक्ष, (absolute) समानता के स्थापन को अपना

लक्ष्य नहीं मानता क्योंकि ऐसा असंभव है। इसका उद्देश्य अमीरों पर उत्तरोत्तर कराधान लागू करके धन की बढ़ती हुई असमानता को दूर करना है। यह सभी के लिए न्याय संगत अवसरों का समर्थन करता है।

लोकतांत्रिक समाजवाद उत्पादन के महत्त्वपूर्ण साधनों के सार्वजनिक स्वामित्व का भी समर्थन करता है जिन्हें सभी के कल्याण के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। यह पूर्णरूपेण नागरिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों को स्वीकृत किए जाने के पक्ष में है। व्यष्टि अपने जीवनयापन के लिए स्वतंत्र है, वहाँ कोई व्यवधान नहीं होना चाहिए। यह राजनीतिक क्षेत्रों से लेकर आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों तक लोकतंत्र के विस्तार का समर्थक है। इस प्रकार, लोकतंत्र का आधार बढ़ाए जाने की माँग की जाती है। इसके अनुसार, यदि लोकतंत्र को वास्तव में लाना है तो इसे राजनीति की सीमाओं से काफी परे जाना होगा तथा आर्थिक क्षेत्र में प्रविष्ट होना पड़ेगा।

यह समुदाय की कीमत पर कुछेक द्वारा भूमि, कारखानों और उत्पादन के अन्य समानों के स्वामित्व के विरुद्ध है। यह स्पष्ट तौर पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि लोकतांत्रिक समाजवाद सभी प्रकार की निजी संपत्ति के विरुद्ध नहीं है, अपितु, यह केवल उस निजी संपत्ति के विरुद्ध है जो शोषण का माध्यम बनती है। यह छोटे-छोटे भूखंड, गृहों और अन्य सीमित संपत्ति की अनुमति देती है, क्योंकि इन्हें समाज विराधी कार्यों में प्रयोग नहीं किया जा सकता। संक्षिप्त में, हम कह सकते हैं कि लोकतांत्रिक समाजवाद न तो मात्र पूंजीवाद का विरोधी है और न राज्य नियंत्रणवाद का। जे.पी. नारायण के अनुसार ''मानव द्वारा मानव को कोई शोषण न हो, कोई अन्याय हो, कोई उत्पीड़न न हो अथवा किसी को अवसरों की मनाही न हो।''

ब्रिटेन में लोकतांत्रिक समाजवाद की जीत का एक उल्लेखनीय परिणाम यह था कि ब्रिटिश राजनीति में महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में साम्यवाद का उन्मूलन हुआ। विकासशील देशों में भी लोकतांत्रिक समाजवाद समानों का आवश्यक सामाजिक-आर्थिक निरूपण करके साम्यवाद और पूंजीवाद की अतिवादी स्थिति का विकल्प मुहैया कराता है।

23.8 नवीन वामवाद : सोवियत मार्क्सवाद पर हमला

नवीन वामवाद में अपना एक विशिष्ट प्रकार का लक्षण है। यह समाजवाद में विश्वास करता है, तथापि मानवता को बढ़ावा देने और उसके संरक्षण के लिए संघर्ष करता है जो पूर्ववर्ती सोवियत संघ की समाजवादी प्रणाली में बलि का बकरा बनकर रह गया था। अर्थात् जहाँ समाजवाद की उपलब्धियाँ परंपरागत वामवाद की आधारशिला हैं, वहीं लोकतंत्र और समाजवाद से एकीकृत समाजवाद, सामान्यतः नवीन वामवाद के नाम से जाना जाता है। नवीन वामवाद को पुराने वामवाद से जो अलग करता है, वह है इसका सकारात्मक सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने पर प्रबल ज़ोर। यह स्वतंत्रता और लोकतंत्र में विश्वास करता है तथा इन आदर्शों के लिए संघर्षरत रहता है।

नवीन वामवाद द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की अवधि का उत्पाद है। इसका विकास तीन घटकों के कारण हैं : पूर्ववर्ती सोवियत संघ के महान कॉमरेडों द्वारा प्रदत्त सरकारी मार्क्सवाद के विरूपण (version) के प्रति कड़ी प्रतिक्रिया, प्रगतिशील पाश्चात्य देशों की प्रचतर समष्टियों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक तौर पर गठन के प्रति प्रबल विरोध तथा मानव की योग्यता और प्रतिष्ठ पर अति प्रबल ज़ोर। अर्थात यह आन्दोलन बहुस्तरीय विरोध का परिणाम था – स्टैलिनवादियों की ज़्यादत्तियों के विरुद्ध, सोवियत नेताओं द्वारा यथा प्रदत्त मार्क्सवाद के सैद्धांतिक और कारीगर संबंधी विरूपण के विरुद्ध,

कार्य करने के केन्द्रीकृत और अलोकतांत्रिक तरीकों के विरुद्ध तथा उत्पीड़न के मानवता विरोधी, लालफीताशाही और रूढ़िवादी समाज के विरुद्ध विरोध।

आज की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है, नवीन वामवाद का पुनरोत्थान जिसे 'नवीन समाजवाद' का नाम दिया जा सकता है। नागरिक अधिकारों के लिए अमेरिकी नीग्रों का संघर्ष, शैक्षणिक प्रणाली में परिवर्तन की माँग करने वाला फ्रांस का छात्र आन्दोलन, राजनीतिक प्रणाली के लोकतंत्रीकरण के लिए स्पेन में मज़दूर वर्ग का संघर्ष ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाएं हैं जिन्हें वे नवीन वामवादी विचारकों को यह कहने के लिए प्रेरित किया कि यौवनपूर्ण घटक अपेक्षित राज्यकार्यों को प्रभावित कर सकते हैं। परिवर्तन आवश्यक है : वास्तविक लोकतंत्र के लिए परिवर्तन, जिसे जनता के युवा वर्ग द्वारा लाया जा सकता है। ऐसा इसीलिए क्योंकि वे अकेले एक समाजवादी तंत्र के हानिकारक आयामों को समझ सकते हैं और तत्पश्चात्, एक स्वतंत्र, लोकतांत्रिक और प्रतिष्ठित जीवन की स्थापना के लिए संघर्ष कर सकते हैं।

संक्षेप में, नवीन वामवादियों का उद्देश्य मार्क्सवाद के उन रूपों पर हमला करना है जो पूर्ववर्ती सोवियत संघ में विकसित हुए थे। इसकी बजाए वे मार्क्सवाद के व्यावहारिक अंग पर आधारित समाजवाद के नए स्वरूप के शब्दों के बारे में विचार करते हैं। इस प्रकार का समाजवाद लोकतांत्रिक प्रणाली के परिसरों के अनुरूप होना चाहिए ताकि जनता को स्वतंत्रता, विकास और प्रसन्नता का वरदान मिल सके।

23.9 लोकतांत्रिक क्रियाविधियों के माध्यम से समाजवाद के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ/कठिनाइयाँ

यह कहना कि लोकतांत्रिक उपायों से समाजवादी शासन में परिवर्तन लाना संभव है, अवश्यमेव इस बात का प्रतीक नहीं है कि इन उपायों के द्वारा समाजवाद को लागू करना और उसे कायम रखना भी संभव है। साम्यवादी सिद्धांत ने हमेशा दृढ़तापूर्वक अभियोग लगाया है – और इस मुद्दे पर उसने अभी भी कोई बदलाव नहीं किया है– कि स्वतंत्र चुनाव, भाषण की स्वतंत्रता, संगठन की स्वतंत्रता और स्वतन्त्र बहुमत के निर्णयों की प्रणाली के तहत समाजवाद को आगे बढ़ाना असंभव है।

सोवियत सिद्धांतवादी अपनी इस युक्ति पर अकेले नहीं है कि समाजवाद का कार्यान्वयन और उस पर बने रहना लोकतांत्रिक साधनों से असंभव है। फ्रिडरिश हैयक जैसे दक्षिणपंथी उदावादी उनसे इस बात पर सहमत हैं। वस्तुतः उनका हित इसके प्रतिकूल है; वे लोकतंत्र को कायम रखना तथा समाजवाद का परित्याग करना चाहते हैं। परन्तु यहाँ चर्चा को मुद्दों– यह कि क्या लोकतंत्र और समाजवाद दोनों को रखना संभव है – दोनों विरोधी सहमत हैं कि यह असंभव है। हैयक अपनी पुस्तक ''रोड ऑफ सर्फडम'' में भविष्यवाणी करते हैं कि समाजवाद निश्चित तौर पर लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं का उन्मूलन करेगा।

उनका एक प्रमुख तर्क यह है कि समाजवाद के लिए केन्द्रीकृत नियोजन की अपेक्षा की जाती है और यह कि उस स्थिति में भी जब समाजवाद के लिए विशाल बहुमत है, प्रायः ऐसा कोई बहुमत नहीं होगा जो विशेष नतीजों और साधनों पर सहमत होने के लिए समर्थ हो। ऐसी स्थिति में वह कहतें हैं कि एक लोकतांत्रिक संसद ''निर्देशन नहीं कर सकती है''।

लोकतंत्र और समाजवाद के बीच असंगति के लेनिन-हैयक सिद्धांत के मूल्यांकन में हमें उनके संयुक्त तर्कों को शक्ति को कम नहीं आंकना चाहिए। वे सक्षमतापूर्वक गंभीर

परेशानियाँ और खतरों की ओर इशारा करते हैं। परन्तु वे इस असंभावना को सिद्ध करने में विफल रहते हैं। उनके अभियोग उत्कृष्ट होते हुए भी आधे सच हैं।

यह एक मजबूत तर्क है कि वे जो अपने विशेषाधिकार खो सकते हैं, संभव है हिंसात्मक विरोध में उठ खड़े हों, जब पूर्णरूपेण समाजवादी वैधानिक मुद्दे एक लोकतांत्रिक विधायिका में समाजवाद के समर्थन में बहुमत का निर्माण करते हैं। इसका 1931 की स्पेनिश क्रांति के बाद प्रभावी उदाहरण मिलते हैं, जब नव-निर्वाचित संसद का लोकतांत्रिक बहुमत गणतंत्रीय सरकार के समर्थन के लिए पर्याप्त से मज़बूत अपने निजी सशस्त्र बल तैयार करने से पहले सभी निहित स्वार्थों – राजतंत्रवादी, सेना, गिरिजाघर, बड़े जमींदारों और उद्योगपतियों के विरुद्ध इस वैज्ञानिक निर्णय का कोई औचित्य नहीं है कि ऐसा ही भिड़न्त में संलग्न हो गया। तथापि, जब लोकतांत्रिक क्रियाविधियों से समाजवाद को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाए।

इस समस्या एक अन्य प्रबल तर्क यह है, कि मज़दूर वर्ग जिसने संसदीय बहुमत को जीता है, प्रत्यक्ष लाभों को तीव्रता से और युक्तियुक्त सीमाओं से परे प्राप्त करने की अपनी इच्छा में अधीर हो सकता है। इस खतरे का मुकाबला करने के लिए लोगों को पहले से ही शिक्षित करना आवश्यक होगा, जिससे उन्हें बहुमत की शक्तियों के अर्थपूर्ण प्रयोग के लिए तैयार किया जा सके।

अन्ततः यह एक वजनदार तर्क है जब हैयक चेतावनी देतें हैं कि बहुमत के टूटने की संभावना रहती है, जब कभी भी योजना के बारे में प्रमुख निर्णय आवश्यक हो जाए। यदि पहले से ही खतरे को अच्छी तरह समझलिया जाए तो उचित युक्ति का प्रयोग करके इस पर काबू पाना असंभव नहीं होगा; जैसे बड़ी योजनाओं को अधीन चालू आर्थिक निर्णय करने के लिए किसी बोर्ड अथवा आयोग को शक्ति का प्रत्याभोजन करना।

इस प्रकार लोकतंत्र और समाजवाद के बीच सामंजस्य का प्रश्न अभी भी खुला हुआ है। यह विश्वास का उचित कारण है कि एकतंत्रवादी सड़क पर चलना आवश्यक है, यदि बहुमत का रुझान समाजवाद को निष्पादित करना हो जाए यद्यपि आर्थिक विधी निर्माण और प्रशासन की प्रक्रिया में कतिपय संशोधन आवश्यक होंगे।

समाजवाद और लोकतंत्र के मध्य सामंजस्य संबंधी एक विलक्षण और आशावादी राजनीतिक सिद्धांत की स्थापना उन किसी भी प्रकार की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन प्रदान कर सकता है, जो कि विद्यमान सोवियत रूस अथवा उसके कुछ अनुगामी देशों में जन्म ले सकती है। इससे लोकतंत्र और समाजवाद दोनों तथा दानों के सहअस्तित्व के बारे में अन्तर्राट्रीय राजनीतिक चर्चाओं में एक अधिक मज़बूत और स्पष्ट भाषा संभव होगी।

बोध प्रश्न 5

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलायें।

1) समाजवाद के व्यापक सिद्धांत क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) नवीन वामवाद क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) लोकतांत्रिक क्रियाविधियों के माध्यम से समाजवाद को लागू करने में चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

23.10 सारांश

इस इकाई में हमने पाश्चात्य उदारवादी लोकतंत्र और समाजवादी लोकतंत्र दोनों के बीच मतभेदों और साथ की उनके आवश्यक संघटकों और मूल तत्वों की विस्तार से चर्चा की है।

समाजवादी लोकतंत्र की संकल्पना के स्वयं भीतर ही एक तंत्र है, जो प्रतिस्पर्धा की बजाए सहयोग पर आधारित समाज का निर्माण करता है। पिछले एक दशक से, इटली, फ्राँस, पूर्वी यूरोप और रूस में एक विचारधारा के रूप में साम्यवाद की शक्ति में कमी आई है। दूसरी तरफ, लगभग सभी यूरोपियन देशों में सामाजिक लोकतांत्रिक दलों की ताकत में वृद्धि हुई है। मूलभूत मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, समानता और सहचर्य के संदर्भों में, समाजवादी लोकतंत्र को परिभाषित किया जाना चाहिए। यह संसाधनों और उद्यमों पर सार्वजनिक नियंत्रण की माँग का समर्थन करता है। समाजवादी लोकतंत्र का सार समाजवाद की चार मूलभूत प्रवृतियों में सन्निहित है। ये प्रवृतियाँ हैं : समाजवाद जिसका अर्थ है, समानता की धारणा नैतिकवाद जिसका अर्थ है मानव मात्र के बीच भ्रातृवत प्यार और समझदारी की भावना,

तार्किकवाद जिसका अर्थ है, युक्ति और ज्ञान जो लोकतांत्रिक कार्यों की तरफ अग्रसर करें और इच्छास्वातंत्र्यवाद जो समानता की स्वीकृति के साथ आगे बढ़ता है।

हाल ही में, लोकतांत्रिक समाजवाद के प्रति उत्तरोत्तर प्रवृत्ति विकसित हुई है। यह संकल्पना समाज के व्यापक हितों, सहयोग, आर्थिक समानता, उत्पादन का सार्वजनिक स्वामित्व, जिसे सार्वजनिक हित के लिए प्रयोग किया जाए तथा साम्यवाद की अतिवादिताओं के परिहार पर ज़ोर देती है। स्वतंत्रता के बाद प्रथम तीन दशकों के दौरान, लोकतांत्रिक समाजवाद भारत की सर्वाधिक प्रभावशाली राजनीतिक विचारधारा में विकसित हुआ। भारतीय राजनीति के लोकतांत्रिक समाजवादी ध्रुवीकरण को गणतांत्रिक संविधान में 1952 से पंचवर्षीय योजनाओं में और सामान्यतः घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय, दोनों प्रकार के कार्यों में भारत सरकार के संचालन में सजीव शब्दों में समझाया गया है। तथापि भूमण्डलीकरण और उसके परिणामतः आर्थिक सुधारों के मद्देनज़र, स्थिति में भारी परिवर्तन आया है।

नवीन वामवाद के पुनरोत्थान को ''नया समाजवाद'' का नाम दिया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसका उद्देश्य मार्क्सवाद के उस स्वरूप पर हमला बोलना था जो भूतपूर्व सोवियत संघ में विकसित हुआ। नवीन वामवाद ने स्वतंत्रता और विकास के लिए अभिप्रेत लोकतांत्रिक प्रणाली के परिसरों पर ज़ोर दिया।

समाजवाद और लोकतंत्र की मध्य सामंजस्य संबंधी विलक्षण और आशावादी राजनीतिक सिद्धांत की स्थापना और अधिक लोकतांत्रिक संस्थाओं की शुरुआत के प्रति एक प्रोत्साहन है। आज, यदि समाजवादी लोकतंत्र को और अधिक वास्तविक बनाना है, तो इसे लोकतांत्रिक सिद्धांतों को समाज के राजनीतिक क्षेत्रों से लेकर ग़ैर-राजनीतिक क्षेत्रों तक अनुप्रयोग को व्यापक बनाकर किया जा सकता है। इस प्रकार का समाजवाद एक लोकतांत्रिक प्रणाली के परिसरों के अनुरूप होना चाहिए।

23.11 शब्दावली

कुलीन तंत्र : कुछ व्यक्तियों द्वारा शासित राज्य।

उदारीकरण : अत्यधिक उदारता और स्वतंत्रता की विचारधारा।

साम्यवाद : सामाजिक व्यवस्था जिसमें उत्पादन के साधन सार्वजनिक स्वामित्व वाले हों।

समतावाद : मानवता की समानता का दावा करता है।

वाम वाद : वाममर्गियों का राजनीतिक दृष्टिकोण।

23.12 कुछ उपयोगी संदर्भ

आर्थर रॉजैनबर्ग, *डैमोक्रेसी एंड सोशलिज्म,* लंदन, जी. वैल एंड सन्स लि. 1939।

फ्रान्सिस, डब्ल्यू कोकर, *रीसेन्ट पॉलिटीकल थॉट,* न्यूयार्क, 1939।

आर.एन. वर्की, सोशलिज्म, न्यूयॉर्क।

सोशलिज्म : द फर्स्ट 100 ईयर्स, ऐनैलिस्ट, द सेन्टर फार लेवर एंड सोशल स्टडीज़ इनक इटली।

23.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 23.1 एवं 23.2

2) देखें भाग 23.2

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 23.3

2) देखें भाग 23.4

बोध प्रश्न 3

1) देखें भाग 23.5

2) देखें भाग 23.6

बोध प्रश्न 4

1) देखें उप-भाग 23.6.1

2) देखें उप-भाग 23.6.3

बोध प्रश्न 5

1) देखें भाग 23.7

2) देखें भाग 23.8

3) देखें भाग 23.9